Important information for visitors

- This school is for everyone, and no entry fee is levied. There is no discrimination for religion, caste, creed, richness-poverty, gender or colour etc.
- Before entering into Dhyan-Kaksh, one has to pass through the seven gates which are symbols of contentment, endurance, truthfulness, righteousness, equality, selflessness and benevolence.
- Leave your shoes outside before entering Dhyan-Kaksh and enter with reverence and obeisance.
- One can obtain the "Guidelines of Dhyan-Kaksh, i.e. School of Equanimity & Even- sightedness" from the volunteer present there and understand the minute features of the architecture.
- **Basement:** This floor of Dhyan-Kaksh is the school of Equanimity & Even-sightedness, and the science of inner dimensions is taught through a systematic process of meditation from here. A 10-minute video about the detailed information regarding Dhyan-Kaksh is also shown here.
- **Ground Floor:** This floor is called *Sargun* floor, and a mace has been established here as a symbol of peace and power. Its purpose is to make every person realize his real power by keeping their mind in the state of equilibrium.
- **First Floor:** This floor of Dhyan-Kaksh is called *Nirgun* floor, and the centrally situated lightened flame is a reflection of the divine flame which is lightened on the top of Dhyan-Kaksh.
- About five hundred people can conveniently sit in the three floors of Dhyan-Kaksh.
- While coming out of Dhyan-Kaksh, take a round of it from your left and carefully read and try to imbibe the life-motivating quotes mentioned outside on its boundary.
- Booklet about Dhyan-Kaksh and video can be obtained from the Trust office.

Facilities & Local Transport

- Parking, place for keeping shoes and belongings, drinking water, toilets, first-aid, cafeteria, lawn etc. are available
- Direct and shared Auto's are available from old Faridabad and Kheri chowk

Basement/भूतल

Ground Floor/ भूमितल

First Floor/प्रथम-तल

'ध्यान-कक्ष' अर्थात् 'समभाव-समदृष्टि के स्कूल' में आपका आना आपके व आपके परिवार के लिए कल्याणकारी हो।

Symbol of oneness

DHYAN-KAKSH

SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

Explore Dhyan Kaksh

www.dhyankaksh.org

Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2

Visiting hours

Winters
10.00am – 4.00pm (October 1 – March 31)

Summers
10.00am – 5.00pm (April 1 – September 30)

Dhyan-Kaksh is open all days of the week

Under the aegis of

Satyug Darshan Trust (Regd.)

Satyug Darshan Vasundhara, Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002 (Haryana)

HARYANA TOURISM

Come, holiday with us !

Mobile : +91 8595070695 | Email: contact@dhyankaksh.org | Website: www.dhyankaksh.org

ध्यान-कक्ष क्या है?

सतयुग दर्शन ट्रस्ट, फरीदाबाद द्वारा वसुन्धरा परिसर में स्थापित ध्यान-कक्ष जोकि समभाव-समदृष्टि के स्कूल के नाम से जाना जाता है, अपने आप में स्थापत्य कला की अद्वित्तीय मिसाल है। इस ध्यान-कक्ष का शुभ प्रारम्भ दिनाँक 26 जनवरी 2014 को किया गया व यहाँ से अब ध्यान के माध्यम से आंतरिक आयामों के विज्ञान की शिक्षा दी जाती है। यह ध्यान-कक्ष सतयुग की पहचान व मानवता का स्वाभिमान के रूप में स्थापित किया गया है।

ध्यान-कक्ष में क्या होता है?

इस ध्यान-कक्ष से मानवों को नैतिक चारित्रिक मानवीय आदर्शों के अनुरूप ढाल मानसिक रूप से सदाचारिता पूर्ण आचरण व निष्काम कर्म करने के योग्य बनाया जाता है ताकि उनकी वृत्ति-स्मृति व बुद्धि निर्मल हो जाए और वे कर्म फल व तीनों तापों से आजाद रह, अंत मोक्ष को प्राप्त कर अपना जीवन सार्थक बना सकें।

विशेषत: इस लौकिक जगत में विचरते समय मानसिक रूप से अपने मूल धर्म पर सत्यनिष्ठा से समरस बने रहने के लिए उन्हें, अंतर्निहित अलौकिक ज्ञान शक्तियों व गुणों से भी परिचित कराया जाता है। ताकि सांसारिक कठिन परिस्थितियों में उनका आत्मिक बल किसी विध् कमजोर न पड़े और वह आत्मविश्वास के साथ आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास रखते हुए आत्मनिर्भर होकर एक सजन पुरुष बन जाएं।

ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि के स्कूल को खोलने का क्या उद्देश्य है?

इस स्कूल को खोलने का मुख्य उद्देश्य, आज के कलियुगी मानव को पापयुक्त भाव-स्वभाव छोड़, आत्मीयता अनुरूप सतयुगी भाव-स्वभाव अपना, सतयुगी इन्सान बनने के लिए प्रेरित करना है ताकि वह अपने मूल धर्म पर सत्यता से खड़ा हो एक तो खुद मन:शांति को प्राप्त करने में सक्षम हो उच्च बुद्धि, उच्च ख़्याल हो जाए, दूसरा लौकिक हित के निमित्त समाज की नैतिक उन्नति के प्रति धर्मानुकूल निष्काम भाव से पुरुषार्थ दिखाते हुए, परोपकारी नाम कहा अक्षय यश-कीर्ति को पाए।

यह समभाव-समदृष्टि का स्कूल समाज में किस प्रकार का परिवर्तन ला सकेगा?

ध्यान-कक्ष से बताई जा रही समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुशीलन द्वारा हर मानव अपने मन व इन्द्रियों को वश में रख जितेन्द्रिय बन सकता है और समवृत्ति हो यानि सुख-दु:ख, हानि-लाभ आदि में स्थिर मानसिकता में बने रह, जगत विजयी होने में सफल हो सकता है। साथ ही जीवन के विचारयुक्त रास्ते पर प्रशस्त रहते हुए एक तो अपना घर सतयुग बना सकता है दूसरा कुल मानव जाति को एकता के सूत्र में बाँध सकता है।

ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि के स्कूल से समाज के लिए क्या आवाहन है?

समय की चाल को दृष्टिगत रखते हुए कि अब कलुकाल जा रहा है और सतयुग आ रहा है यह ध्यान-कक्ष हर मानव को सतयुगी नैतिकता व आचार-संहिता अपना विचार, सत्-ज़बान, एक दृष्टि, एकता और एक अवस्था में आने का आवाहन दे रहा है।

यहाँ आने वाले दर्शकों के लिए आवश्यक जानकारी :

- यह स्कूल सबका सांझा व बिल्कुल नि:शुल्क है। यहाँ धर्म-विभेद, जाति-पाति, अमीरी-गरीबी व रंग-भेद आदि का कोई सवाल नहीं है।
- ध्यान-कक्ष में प्रवेश से पूर्व निर्मित सात द्वारों, जोकि क्रमश: संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म, सम, निष्काम व परोपकार के प्रतीक हैं, के मध्य से होकर आएं।
- ध्यान-कक्ष में प्रवेश से पूर्व अपने जूते-चप्पल बाहर उतारें। तत्पश्चात् श्रद्धापूर्वक अपना सीस अर्पण कर अन्दर प्रवेश करें।
- वहाँ उपस्थित कार्यकर्त्ता से या 'ध्यान-कक्ष' अर्थात् 'समभाव-समदृष्टि के स्कूल' की मार्गदर्शिका नामक पुस्तिका से ध्यान कक्ष के निर्माण कला की बारीकियों को ध्यानपूर्वक समझें।
- **भूतल:** ध्यान कक्ष का यह तल समभाव-समदृष्टि का स्कूल है जहाँ से समभाव-समदृष्टि की युक्ति अनुरूप सजन भाव की पढ़ाई करा, परस्पर आत्मीयता युक्त व्यवहार करना सिखाया जाता है। साथ ही ध्यान-कक्ष के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए दस मिनट का वीडियो भी दिखाया जाता है।
- **भूमितल:** ध्यान-कक्ष का यह तल सर्गुण तल कहलाता है और यहाँ शांति-शक्ति के प्रतीक गदा की स्थापना की गई है जिसका मुख्य मकसद हर मानव को अपना मन-मस्तिष्क शांत रखते हुए, अपनी वास्तविक शक्ति का बोध कराना है।
- **प्रथम-तल:** ध्यान-कक्ष का यह तल निर्गुण तल कहलाता है और इस तल के मध्य में प्रकाशित ज्योति ध्यान-कक्ष के सर्वोच्च शिखर पर प्रकाशित आद् जोत का प्रतिबिम्ब है।
- ध्यान-कक्ष के तीनों तलों में लगभग पाँच सौ से अधिक व्यक्ति आराम से बैठ सकते हैं।
- ध्यान-कक्ष से बाहर आने के बाद निकास द्वार से बाएं होते हुए ध्यान-कक्ष की परिक्रमा करें और चारों तरफ लिखे जीवनदायक विचार-बिन्दुओं को पढ़े और समझ कर आत्मसात् करें।
- ध्यान-कक्ष के बारे में पुस्तिका व वीडियो आदि ट्रस्ट कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

स्थानीय ट्रान्सपोर्ट: ओल्ड फरीदाबाद, सेक्टर 29 व खेड़ी चौक से सीधे व शेयर ऑटो उपलब्ध।

सुविधाएँ: पार्किंग, जूते-चप्पल रखने का स्थान, पीने का पानी, शौचालय सुविधा, प्राथमिक चिकित्सा, कैफेटेरिया, लॉन।

What is Dhyan-Kaksh?

Established by Satyug Darshan Trust in its Vasundhara campus, Dhyan-Kaksh is a marvel of the modern architecture and is also known as School of Equanimity and Even-Sightedness. Inaugurated on 26 January 2014, the science of inner dimensions is taught through a systematic process of meditation from here. The establishment of Dhyan-Kaksh is a symbol of the Golden Era, i.e. *Satyug* and pride of humanity.

What happens in Dhyan-Kaksh?

At Dhyan-Kaksh, one is groomed as per moral characteristics of an ideal human being to mentally perform righteous conduct and ethos to be eligible to do work with selflessness. So that their instinct - memory and intelligence become pure. Thereby remaining free from result of *karma* and three *taap* one can live their life meaningfully to obtain salvation.

Here one is introduced with their immanent power of wisdom and virtues, especially while doing one's duties truthfully by remaining identic on their basic *dharma* in this mundane world. Thus their spiritual power is not to be weakened when facing the challenging worldly circumstances. Also by keeping faith on the eternity of soul and Supreme Soul, the eternity of life and values one can self-dependently become a gentle person with confidence.

What is the purpose of opening Dhyan-Kaksh, i.e. School of Equanimity & Even sightedness?

The primary purpose of opening this school is to motivate today's person of *Kalyug* to shed their sinful emotional-behavioural indulgence and to become a person of *Satyug*, i.e. the Golden era by adopting *satyugian* code of conduct. By truthfully standing on one's basic *dharma* they themselves become capable of attaining inner peace resulting in beings with high-intellect and high-thinking. Hence in the interest of moral progress of the society, one becomes benevolent and attains everlasting glory by doing selfless and righteous deeds.

How can the School of Equanimity & Even sightedness bring change in society?

By practising the teachings of Dhyan-Kaksh about Equanimity and Even-Sightedness, every person can be a stoic, win the mundane world by controlling his mind and senses and by remaining equal in the state of sorrow or happiness and loss or gain.

What is the message for society from Dhyan-Kaksh, i.e. School of Equanimity & Even-Sightedness?

Keeping in view the present period, when *Kalyug* is retreating, and *Satyug* is arriving, Dhyan-Kaksh is calling every person to adopt *satyugian* ethics and code of conduct for keeping their thoughts, speech and vision in the state of unity and oneness to restore everlasting peace on earth.